

विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण पक्ष-१२, शनिवार, ता. ६-८-१९८०  
वचनामृत-३६६, ३६८, ३६९, प्रवचन नं. २६

जिसने आत्माको पहिचाना है, अनुभव किया है, उसको आत्मा ही सदा समीप वर्तता है, प्रत्येक पर्यायमें शुद्धात्मद्रव्य ही मुख्य रहता है. विविध शुभ भाव आये तब कहीं शुद्धात्मा विस्मृत नहीं हो जाता और वे भाव मुख्यता नहीं पाते.

मुनिराजको पंचाचार, व्रत, नियम, जिनभक्ति धृत्यादि सर्व शुभ भावोंके समय भेदज्ञानकी धारा, स्वरूपकी शुद्ध चारित्र्यशा निरंतर चलती ही रहती है. शुभ भाव नीचे ही रहते हैं; आत्मा ऊंचाका ऊंचा ही-ऊर्ध्व ही-रहता है. सब कुछ पीछे रह जाता है, आगे ओक शुद्धात्मद्रव्य ही रहता है. ३६६.

वचनामृत, ३६६. 'जिसने आत्माको पहिचाना है,...' पहली बात तो यह है कि आत्माका ज्ञान प्रथम होना चाहिये, पीछे सब बात. आत्मा ज्ञानानंद सहज्ज्वात्म स्वरूप शुद्ध नित्यानंद, उसके सन्मुख होकर उसका अनुभव होना चाहिये. पहली... 'जिसने आत्माको पहिचाना...' कि मैं तो ज्ञान और आनंद शुद्ध चैतन्यमूर्ति हूं. ऐसी उसको आत्माको पहिचान होती है. अनुभव किया है. पहिचाना है तो अनुभव

भी किया है कि आत्मा ज्ञान स्वभाव (है). उसका अनुभव आनंदका अनुभव सम्यग्दर्शन होनेपर (हुआ है). धर्मकी पहली सीढ़ी, धर्मकी प्रथम शुरुआत. उसमें पहले पहचान कर अनुभव किया. आह्लाहा..! थोड़ा कठिन है.

सर्व प्रथम यह करनेका है. देखें तो भिन्न है. परंतु दया, दान, पुण्य-पापके भाव, उससे भी यह चैतन्य भगवान ज्ञायकभाव भिन्न है. आह्लाहा..! उसका जब पहले ज्ञान हो तब उसका अनुभव होता है. यह आत्मा ऐसा है, ऐसा ज्वालमें आता है, तब उसका अनुभव होता है. अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद आता है. आह्लाहा..! 'उसको आत्मा ही सदा समीप वर्तता है,...' अधिकार बहुत अच्छा आया है, मूल अधिकार है. 'जिसने आत्माको पहचाना है, अनुभव किया है, उसको आत्मा ही सदा समीप वर्तता है,...' कोई भी क्रियाकांड जगतकी हो, शरीर, वाणी, मनकी या शुभाशुभ भाव हो, फिर भी आत्मा ही दृष्टिमें समीप वर्तता है. आह्लाहा..! ऐसी कठिन बात.

'उसको आत्मा ही...' 'ही' शब्द है न? आत्मा ही. आत्मा मुख्य वर्तता है. सब प्रसंगमें आत्माका ज्ञान हुआ है तो आत्मा ही सब प्रसंगमें मुख्य वर्तता है. आह्लाहा..! आत्माको छोड़कर कभी ज्ञानीकी दृष्टि पर उपर नहीं जाती. पर होता है उसको जानते हैं, परंतु दृष्टिका विषय जो ध्रुव आया है, उसमेंसे हटते नहीं. आह्लाहा..! ऐसी धर्मकी बात. 'उसको आत्मा ही सदा समीप वर्तता है, प्रत्येक पर्यायमें...' आत्माकी प्रत्येक अवस्थामें-कोई भी अवस्था हो-शुभ हो या अशुभ हो, 'शुद्धात्मद्रव्य ही मुख्य रहता है.' कोई भी पर्यायमें-अवस्थामें आत्मा ही मुख्य वर्तता है. पर्यायकी मुख्यता कभी नहीं होती. आह्लाहा..! यह बात!

... उस अवस्थाकी मुख्यता कभी नहीं होती. दृष्टिमें आत्माकी पहचान लुयी और अनुभव हुआ तो आत्मा ही सदा प्रथम मुख्य वर्तता है. आह्लाहा..! ऐसी बात. (अज्ञानी) कहे, यह करो, यह करो, वह करो. .... आत्मा क्या चीज है, वह कुछ नहीं. आह्लाहा..! अनंत काल हुआ,

अनंत काण्ठी आथड्यो, विना भान भगवान,  
सेव्या नहि गुरु संतने, मूक्या नहि अभिमान.

आह्लाहा..! अपना स्वरूप ज्ञान और आनंद स्वरूप त्रिकावी प्रभु, उसकी प्रथम दृष्टि लुयी और अनुभवमें पहचाना.. आह्लाहा..! उसकी प्रत्येक पर्यायमें, प्रत्येक अवस्थाकी दृशामें आत्माकी मुख्यता वर्तती है. पर्यायकी मुख्यता वर्तती नहि. आह्लाहा..! क्या कहते हैं? पर्यायमें अनेक अवस्था होती है, फिर भी धर्माश्रवकी-आत्माके

अनुभववीकी दृष्टिमेंसे आत्मा त्रिकाव नहीं उटता. दृष्टिमें आत्मा ही मुख्य वर्तता है. आलाला..!

‘विविध शुभभाव आयें तब कहीं शुद्धात्मा विस्मृत नहीं हो जाता...’ आलाला..! कहते हैं कि शुभभाव आयें, दयाका, भक्तिका, पूजाका भाव धर्मीको भी आये, विविध प्रकारके शुभभाव आयें. अेक प्रकारका नहीं, अनेक प्रकारके. दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा (आदि). ‘शुभभाव आयें तब कहीं शुद्धात्मा विस्मृत नहीं हो जाता...’ शुभभावके कालमें भी धर्मीको त्रिकावी आत्मा विस्मृत नहीं होता. आलाला..! यह भाषा पहले तो समझनी कठिन पडे. जैसे मार्ग! कभी सुना नहीं, कभी किया नहीं. आलाला..!

जिसने आत्माकी मुख्यता (की), मुख्य वस्तु भगवान आत्मा ही मुख्य वस्तु है. देव-गुरु-शास्त्रकी भक्तिका भाव आता है, फिर भी उस समय आत्मा जो मुख्य वस्तु है उसकी मुख्य नहीं उटती, पर्यायकी मुख्यता नहीं होती. द्रव्यकी जो द्रव्यदृष्टि लुयी है, उसकी मुख्यता रहती है. कठिन बात है. आलाला..! कुछ करना या छोडना कहे तो ठीक लगे. क्योंकि अज्ञानमें वह अनादिका अभ्यास है. यहां तो कहते हैं, करना तो कुछ नहीं है, परंतु कदाचित् शुभाशुभ परिणाम आवे, उस समय भी शुद्धात्माकी मुख्यता दृष्टिमेंसे उटती नहीं. आलाला..!

दृष्टांत दिया था न? मां और बेटी बीडमें चले जाते हो. उसमें बेटीसे मांकी अंगूली छूट गयी और अकेली रह गयी और बीडमें आगे निकल गयी. पुलीसनी देखा कि यह लडकी अकेली है, उसकी मां (नहीं है). उसे पूछे... यह हमने प्रत्यक्ष देखा है, पोरबंदरमें. चौमासा पोरबंदरमें था. उपाश्रयके पास ही लडकी गूम हो गयी. उसकी मां आगे चली गयी तो गूम गई. ज्वाल नहीं रहा. पुलीस आयी. पुलीसने पूछा, तू कौन है? मेरी मां. नाम क्या है? मेरी मां. तेरी सहेल कौन है? उस परसे गली दूँढकर यहां ले जा सके. तेरी गली कौन-सी है? मेरी मां. अेक ही (बात), मेरी मां, मेरी मां. आलाला..!

जैसे धर्मीको सब प्रसंगमें प्रभु मेरा आत्मा शुद्ध अंदर जे मुख्य अनुभवमें आया, उसकी मुख्यता हमेशा रहती है. आलाला..!

‘विविध शुभभाव आयें...’ विविध यानी अनेक प्रकारके. भक्तिका, नाम स्मरण, एामो अरिहंताएं आदि आयें. लेकिन उस समय भी आत्मा जो दृष्टिमें शुद्ध अनुभवमें आया और आत्माको जो पहचाना है, उसकी विस्मृति नहीं होती. शुभभाव अनेक प्रकारके आते हैं, उस समय भी आत्मा शुद्ध चैतन्यकी दृष्टि है, उसकी विस्मृति

नहीं होती. आह्लाहा..! ऐसा मार्ग. लभूतमलज्ज! पैसेमें कुछ सूजे ऐसा नहीं है. धूलमें. 'विविध शुभभाव आयें...' विविध अर्थात् अनेक प्रकार. दयाका, दानका, स्मरणका, वांचनका, समझना जैसे विविध शुभभाव आयें. फिर भी 'शुद्धात्मा विस्मृत नहीं हो जाता...' शुद्धात्मा त्रिकावी जो है, वह जो दृष्टिमें आया है, वह विस्मृत (नहीं हो जाता), उसे लूल जाय ऐसा नहीं होता. प्रविण्णभाई! यह कभी सुना नहीं. पैसे ईकट्टे किये. कोडोपति. धूल-धूलपति. आह्लाहा..!

मुमुक्षु :- ...

समाधान :- कोड यानी धूल. कोडका अर्थ धूल है-पैसा. आह्लाहा..! जगतकी मिट्टी है. ये तो अभी नोट आ गयी, पहले नगद रुपया था. अब नोट आ गयी. लेकिन वह नोट भी पुद्गल-धूल है. पैसा, सोनेका.. क्या करते हैं? गुल्ली. आपके नाम लूल जाते हैं. सोनेकी गुल्ली हो तो भी धूल-मिट्टी है. अरे..! मणि रत्न हो लाभ रुपयेका, तो भी वह धूल-मिट्टी है. दुनियाने उसकी किमत की है. उसमें कोई किमत नहीं है. आह्लाहा..!

प्रभु आत्मामें तो किमत है. आह्लाहा..! अनंत ज्ञान. ज्ञान तो हो लेकिन वह ज्ञान भी अनंत है. जिस ज्ञानका अंत नहीं, एतनी ज्ञानकी शक्ति है. जैसे श्रद्धा है वह शक्ति भी अनंत है. आनंद है, अतीन्द्रिय आनंद आत्मामें है, वह भी अनंत-अंत नहीं एतना अनंत है. जैसे आत्माको पहियाना तो वह और विविध प्रकारके शुभभाव हों, शुभभाव हो, अशुभको अेक ओर रभो. हिंसा, जूठ, विषयभोग वह तो अकेला पाप है. परंतु विविध प्रकारके-अनेक प्रकारके शुभभाव आयें 'तब कहीं शुद्धात्मा विस्मृत नहीं हो जाता.' शुद्ध भगवान पवित्र आनंदनाथ, जो अनुभवमें पहियानमें ज्ञानमें आया, उसकी कभी कोई प्रसंगमें विस्मृति नहीं होती. आह्लाहा..!

'और वे भाव मुज्यता नहीं पाते.' क्या करते हैं? कि धर्मीको जो शुभभाव आते हैं, परंतु वह मुज्यता नहीं पाते. मुज्यता तो ज्ञायक स्वभाव भगवान आत्मा है, उसकी मुज्यता धर्मीको कभी छूटता नहीं. शुभभावके समय भी शुभभावकी मुज्यता नहीं होती. आह्लाहा..! ऐसी बात. 'शुद्धात्मा विस्मृत नहीं हो जाता.' विविध प्रकारका भाव-भक्ति, पूजामें दिजे, समकित्ती बाहर शुभभावमें उत्साहित दिजे, फिर भी वहां त्रिकावी ज्ञायकभाव पीछानमें, अनुभवमें आया, वह कभी विस्मृत नहीं होता. अथवा उसकी कभी गौणता नहीं हो जाती. शुभभाव बहुत ओंचा आये तो उसकी मुज्यता हो जाय और स्वभावकी गौणता हो जाय, ऐसा कभी नहीं होता. आह्लाहा..! 'नहीं हो जाता. और वे भाव मुज्यता नहीं पाते.' शुभभाव

मुज्यताको प्राप्त नहीं होते. शुभभाव आवे, धर्मको भी आत्मधर्म प्राप्त किया है उसको शुभभाव आता है, परंतु वह शुभभाव मुज्यता नहीं पाते, उसकी मुज्यता कभी नहीं होता, शुभभाव तो गौण हो जाता है और त्रिकावी ज्ञायक जो ज्ञाननेमें आया, उसकी मुज्यता रहती है. अरे..! जैसा धर्म कैसा? आला..! दुनियामें जैसी बात सुनने मिलनी मुश्किल. उसमें वह मुज्यता और गौणता...

मुमुक्षु :- ..

समाधान :- अंतर देखते हैं, अंतर. ज्ञानमें जो वस्तु ज्ञेय लुयी वह कभी हटती नहीं. ज्ञानमें, वह मेरी मां है, वह जनेता है, जैसा ज्वालमें आया तो चाहे जितनी स्त्रियोंको देखे तो भी कोई स्त्रीकी मुज्यता नहीं हो जाती, मांकी मुज्यता रहती है. आलाहा..! समझमें आया?

जैसे धर्माजिव उसे कहें कि जिसे शुभादि भाव तो अनेक प्रकारके आते हैं, फिर भी उसकी मुज्यता चैतन्य ज्ञायक स्वभावकी मुज्यता नहीं हटती और शुभभावकी मुज्यता नहीं होती. आलाहा..! भाषा तो सादी है, परंतु भाव बहुत गहरा है, भाई! आलाहा..! अरे..! अनंत कालमें कभी कोई दरकार नहीं की. बालरकी माथापय्यी करके मर गया. अक तो संसारकी प्रवृत्ति पाप आडे निवृत्ति नहीं मिलती. वहांसे छूटकर यहां आये तो कहे, दया, दान, पुण्य, शुभभावकी क्रियामें अटक जाय. मूल चीज रह गयी. मूल चीज दृष्टिमें आये बिना जन्म-मरणका कभी अंत आता नहीं. वही कहते हैं.

अनेक शुभभाव आते हैं, परंतु वह भाव मुज्यता नहीं पाते. है? मुज्यता तो चैतन्य शुद्ध ध्रुव शुद्ध चैतन्य, उसकी अंतरमेंसे मुज्यता, प्रधानता, अग्रेसरता, अग्रता नहीं होती. और कोई शुभभाव मुज्य हो जाय जैसा होता नहीं. आलाहा..!

‘मुनिराजको...’ अब मुनिराजकी परिभाषा करते हैं. ‘पंचाचार,...’ आलाहा..! ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य-पांच आचार. ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य. ये पांच आचार हो, पंच महाव्रत हो-व्रत, कोई नियम लिया हो कि अमुक जगल.. आला..! आता है न उस प्रकारका नियम? जैसी साडी पहनी हो, जैसा ... हो, और वह लडु जाती हो, तो ही उसके हाथसे लेना है, नहीं तो नहीं लेना है. जैसा नियम भी लेते हैं. फिर भी उस नियम कालमें भी आत्माकी मुज्यता नहीं हटती. आलाहा..! है?

‘नियम, जिनलक्ति,...’ वीतरागकी लक्ति करते हैं. ‘छत्यादि सर्व शुभ भावोंके समय भेदज्ञानकी धारा...’ आलाहा..! उस सब भावके कालमें भेदज्ञानकी धारा अर्थात्

शुभभाव राग है, भगवान आत्मा वीतरागी आनंद है, ऐसा भेदज्ञान-टोका पृथक् ज्ञान भूल नहीं जाते. आलाहा..! यह कैसी बात? अनंत काल हुआ, अनंत काल हुआ, उसने कभी सत्य बात जोड़ी नहीं. असत्यमें संतुष्ट हो गया, जिवन खवा जाता है. और यौरासीके अवतार, कौआ, कूता, सुवर, रींटी, कुंजार, हाथी जैसे अवतार कर-करके मर गया और मरकर मांस आदि जाता हो, सिंह, बाघ फिर मरकर नर्कमें जाय. आलाहा..!

अरे..! भगवान आत्मा मुख्य चीज है, उसको पहचानने तब तो शुभभावके समय भेदज्ञानकी धारा तो चलती है. क्या करते हैं? भक्ति चलती हो, भाव आता है, उत्साह, उद्वास भक्तिमें दिभता है ज्ञानीको, फिर भी भेदज्ञानकी धारा-शुभसे में भिन्न हूं, यह बात भूलाती नहीं. भेदज्ञानका कभी नाश नहीं होता. कोई भी प्रसंगमें हो. आलाहा..! रागादिके प्रसंगमें, भक्तिमें हो, रागसे भिन्न जो भेदज्ञान हुआ है, उसे वह भूलता नहीं. आलाहा..! ऐसा उपदेश.

अनंत काल हुआ, अनंत भव किये, कभी आत्मा क्या चीज है, वह सुननेमें आया फिर भी उस ओर रुचि, अनुभव किया नहीं. आला..! बाकी क्रियाकांड तो र्थतने किये कि नौवीं त्रैवेयक खवा जाय, लेकिन अक भव कम नहीं हो. आत्माके अनुभव बिना भव कम नहीं होता तीन कालमें. आला..!

‘जिनभक्ति र्थ्यादि सर्व शुभभावोंके समय भेदज्ञानकी धारा...’ अर्थात् यह राग है और मैं शुद्ध चैतन्य हूं, ऐसी ‘भेदज्ञानकी धारा, स्वप्नकी शुद्ध चारित्रदशा निरंतर चलती ही रहती है.’ आलाहा..! रागसे भिन्न चलती है और शुद्ध चारित्रदशा. मुनिराज, सख्ये मुनि नग्न मुनि द्विगंबर मुनि होते हैं. जंगलमें बसते हैं. आलाहा..! उनको चारित्रदशामें निरंतर चलती रहती है. शुद्ध चारित्रदशामें भी भेदज्ञान निरंतर वर्तता है. आलाहा..! भाषा... ये तो बहिन रातको ओले लोंगे तो किसी बहनने विभ विधा होगा. यह तो अंदरकी बातें हैं. आलाहा..!

‘शुभ भाव नीचे ही रहते हैं;...’ धर्मीको शुभभाव आता है-दया, दान, भक्ति, पूजा परंतु आत्माके मुख्य भावसे यह शुभभाव नीचे रहते हैं. वह अधिकपना नहीं पाते. आलाहा..! समझमें आया? बात तो निकट है, है तो निकट-समीप, परंतु कठिन है. पुरुषार्थ अनंत पुरुषार्थ चालिये. वह कभी किया नहीं और बाहरमें जिंदगी खली गयी. पशु तुल्य अवतार. पशु जैसे मजदूर करे, वैसे यह भी पूरा दिन राग और पुण्य-पाप, रागकी मजदूरी करता है. आलाहा..! अपने आत्माकी किमत नहीं की. रागके विकल्पसे भिन्न प्रभु, उसको जिसने जाना नहीं.. आला..!

उसने कुछ किया नहीं। और उसने जाना (तो) उसे चारित्र (दशामें) निरंतर चलता रहता है, भेदज्ञान हमेशा रहता है। मुनिको चारित्र-स्वप्नकी समझतामें लक्षित आदिक राग आता है, परंतु भेदज्ञान अंदरसे भिन्नता हमेशा चालू रहती है। आह्लाहा..!

सेठका नौकर पूरा दिन काम करे, सेठके नामसे। फिर भी अंदरमें जानता है कि यह सब धंधाका इव सेठका है। वह कभी भूलता नहीं। राणपुरमें ऐसा बना था। नौकर लोशियार था। नौकरका काम करता था। बड़ी दुकान थी। सेठ बैठे, आये। लेकिन सेठके दिमागका ठिकाना नहीं था। इसलिये बीचमें कुछ बोलने जाय तो नौकर कहे, घर चले जाओ। और नौकरकी छाप भी ऐसी थी। आपका काम नहीं है। व्यापार-धंधेमें कैसे बोलना, कैसे करना आपको मालूम नहीं। चला जाय। सेठको नौकर पर ईतना विश्वास था। उसकी मुज्यता उसे कभी छूटती नहीं। फिर भी उसके हृदयमें, इस व्यापारका इव मुझे नहीं मिलनेवाला है, इव तो सेठको मिलेगा। आह्लाहा..! ऐसा बना है। सेठ था वह दुकान पर आये और बराबर बोले नहीं, (तो नौकर कहे), आप कुछ मत बोलना। घर चले जाओ। चला जाय। ईतना उसे नौकर पर बहुमान था। आदमी ऐसा था। मुझे दूसरा कहना है कि नौकर भले सेठके बलाने सब काम करे, परंतु अंतरमें जानता है कि क्षयदे-नुकसानका व्यापार सेठका है। मेरा नहीं है। मुझे तो जो मेरी नौकरी है वह नौकरी है। आह्लाहा..!

वैसे यहां शुभभावके कालमें भी आत्मा जानता है कि मैं तो आत्मा हूं। शुभभाव में नहीं। आता है अशुभसे बचनेको, परंतु वह शुभभाव दया, दान, लक्षित मेरी चीज नहीं है। आह्लाहा..! 'शुभ भाव नीचे ही रहते हैं;...' शुद्ध शुद्ध आत्माकी मुज्यतामें चैतन्य ज्ञायक स्वभाव, उसकी मुज्यतामें शुभभाव भी गौण रहता है, नीचे रहते हैं, उसको अधिकता नहीं मिलती। अधिकपना तो शुभसे भिन्न आत्मा है, आनंद और ज्ञानको अधिकता देते हैं। आह्लाहा..! अरेरे..! ऐसी बातें कैसी! वीतरागकी बात ऐसी है। तीन लोकके नाथ जिननेन्द्र देव अनंत तीर्थंकरोंका यह वजन है। बलिन तो यहां महाविदेहमें थी, यहांसे आयी हैं। प्रभुके पास थी। सेठके पुत्र थे। यहांसे सीधा ग्रहण किया, सुना हुआ। थोड़ी भूल हो गयी तो यहां काठियावाडमें अवतार हो गया। यह उनके वचन हैं। रातको बलनोंके बीच बोले होंगे। बलनोंने विभ लिया। आह्लाहा..!

कहते हैं,.. आह्लाहा..! 'शुभ भाव नीचे ही रहते हैं;...' आत्मा पुण्य-पाप, शुभ-अशुभ भावसे भिन्न शुद्ध भाव, दया, दान, लक्षित, व्रत, पूजा यह शुभभाव रागभाव है। परंतु उससे भिन्न आत्माका शुद्ध भाव राग बिनाका भाव, उस राग

बिनाके भावकी मुज्यतामें राग आता है उसकी मुज्यता कभी नहीं होती. राग आता है परंतु उसकी मुज्यता कभी नहीं होती. आलाहा..! जैसा कैसा यह? जैसा मार्ग है, प्रभु! जन्म-मरण रहित होनेका और आत्मज्ञानका मार्ग कोई अवैकिक है! अभी बहुत डेरकार हो गया है. आलाहा..! थोड़े शब्दोंमें कितना भरा है! आलाहा..!

‘शुभ भाव नीचे ही रहते हैं; आत्मा जिनका जिनका-उर्ध्व ही-रहता है.’ जिनका नाम रागकी महत्ता, महिमा नहीं आती. महिमा तो चिदानंद रागसे भिन्न आत्माकी महिमा है, वह महिमा कभी उटती नहीं. आलाहा..! ‘उर्ध्व ही-रहता है.’ भगवानका स्वभाव आत्मा जिसने जाना है, उसको तो अंतरमें आत्मा मुज्य ही रहता है. आलाहा..! ‘सब कुछ पीछे रह जाता है,...’ तीर्थंकर गौत्रका भाव कदाचित् आवे तो भी उसकी मुज्यता नहीं होती. क्योंकि वह विकल्प और राग है. जिससे बंधन हो वह राग है. आलाहा..! और आत्माका स्वभाव रागरहित शुद्ध चैतन्यमूर्ति आनंदकंद प्रभु, उसकी दृष्टि लुयी, उसकी मुज्यता कभी जाती नहीं. ‘सब कुछ पीछे रह जाता है,...’ आलाहा..! बहुत अच्छी बात आयी है. आज श्रेतांबरके पर्युषण है ना? आज श्रेतांबरका, कलसे स्थानकवासीके. अपने आर्येगे पंचमीसे. रविवार, पंचमी, भाद्रपद पंचमीसे चतुर्दशी तक. आलाहा..!

‘सब कुछ पीछे रह जाता है, आगे एक शुद्धात्मद्रव्य ही रहता है.’ दृष्टिमें तो आत्मा आनंदका नाथ प्रभु,... आलाहा..! शुद्ध आत्मा पवित्र, पुण्य और पापके मलिन भावसे भिन्न, उसकी मुज्यता दृष्टिमें आती है, कभी उटती नहीं. आलाहा..! उसका नाम धर्मी और धर्म कहते हैं. अरेरे..! उदद लुआ न? ‘आगे एक शुद्धात्मद्रव्य ही रहता है.’ कोई भी पर्यायमें हो, ज्ञानी अशुभभावमें भी आ जाते हैं. आलाहा..! फिर भी आत्मा जो आनंदस्वरूप है, उसकी मुज्यता नहीं जाती. कमजोरीसे पर्यायमें कोई राग आता है. लडाईका (भाव) भी समकित्तिको जा जाता है.

भरत और बाहुबली, दोनों भाई. ऋषभदेव भगवानके दो पुत्र. समकित्ती आत्मज्ञानी (थे), दोनों लडाईमें आ गये. परंतु वह भाव हो, उसमें आत्माकी अंदर मुज्यता है, उस मुज्यताकी कभी गौणता नहीं होती. आलाहा..! अरेरे..! लार्जोंका व्यापार करते लों, कोडोंका घंघा हो, परंतु धर्मी कि जिसने आत्मा जाना है, उसको कभी उसकी मुज्यता नहीं रहती. कोडोंकी कमाई एक दिनकी हो, एक दिनमें कोडोंकी, फिर भी समकित्ती-धर्मी-समकित्ती धर्मकी प्रथम सीढीवाला, उसे आत्माकी मुज्यता उटकर पैसेकी मुज्यता कभी आती नहीं. अरेरे..! जैसी बातें हैं, प्रभु! अरे..! जिंदगी यही जाती है. क्षणमें देह यवा जायेगा. यह भाव समजा नहीं



और आत्माका कुछ किया नहीं तो परिभ्रमण भिटेगा नहीं. यौरासीके अवतार... आलाहा..! अनंत कालसे किये हैं वह करते रहता है.

यहां कहते हैं, आलाहा..! चाहे जितने शुभाशुभ भाव हो, धर्मकी शुद्धात्म द्रव्यकी मुष्यता हमेशा रहती है. समझमें आया? आलाहा..! यह धर्मका लक्षण. ऐसी किया करे, इवाना करे, ठिकना करे वह कोई धर्मका लक्षण नहीं है. आलाहा..! उदह हुआ न?

**पंचेन्द्रियपना, मनुष्यपना, उत्तम कुल और सत्य धर्मका श्रवण उत्तरोत्तर दुर्लभ है. जैसे सातिशय ज्ञानधारी गुरुदेव और उनकी पुरुषार्थप्रेरक वाणीके श्रवणका योग अनंत कालमें महापुण्योदयसे प्राप्त होता है. इसलिये प्रमाद छोडकर पुरुषार्थ करो. सब सुयोग प्राप्त हो गया है, उसका लाभ ले लो. सावधान होकर शुद्धात्माको पहचानकर भवभ्रमणका अंत लाओ. 398.**

उदह. किसीने विभा है कि यह पढना. 'पंचेन्द्रियपना,...' यह पंचेन्द्रियपना मिला. पांच इंद्रियां. काया, जल, नाक, आंज और कान. पांच. 'मनुष्यपना, उत्तम कुल और सत्य धर्मका श्रवण...' सत्य बातका श्रवण. बापु! धर्मके नाम पर अनेक प्रज्ञपणा चलती है, वह धर्मके नाम पर बूठी (है). सत्य धर्मकी प्रज्ञपणा श्रवण मिलनी, वह महा पुण्यका उदय हो तो (मिलता है). आलाहा..! परमात्माका पूर्वापर विरोध रहित श्रवण, ऐसी बात... आलाहा..! 'धर्मका श्रवण उत्तरोत्तर दुर्लभ है.' पहले तो पंचेन्द्रियपना दुर्लभ (है). आलाहा..! कला था न? शास्त्रमें लेभ है. निगोदके जव अनंत हैं, उसमें अनंत कालसे पडे हैं. उसमेंसे लट हो, लट.. लट, तो भी छ ढालामें ऐसा है कि उसमेंसे लट हो तो भी चिंतामणि प्राप्त हुआ. अनंत कालसे निगोदमें जव पडे हैं और अनंत पडे हैं, वे कभी त्रस नहीं हुआ हैं. मनुष्य तो हुआ नहीं. आलाहा..! निगोदमेंसे निकलकर त्रसपना प्राप्त करना, त्रसपना लट, रींटी. उसे भी शास्त्रमें-छ ढालामें अक चिंतामणि गिना है.

मुमुक्षु :- दुर्लभ लह ज्यों चिंतामणि, त्यों पर्याय लही त्रसतणी.

उत्तर :- हां, वह. उन्हें कंठस्थ है. आलाहा..!

वैसे यह मनुष्यपना, पंचेन्द्रियपना, उत्तम कुल और सत्य धर्मका श्रवण, अकके बाद अक दुर्लभ है. जैसे मिलना या पुत्र-पुत्री मिलने दुर्लभ नहीं है. वह तो अनंत बार मिले और गये और नईमें चला गया. आलाहा..! अरबोपति अनंत

बार हुआ. मरकर नर्कमें गया. आलाहा..! या तो निगोदमें यवा गया. तत्त्वका विरोध किया हो और तत्त्वदृष्टि मावूम नहीं हो और तत्त्वसे विरुद्ध हो जाय, वह मरकर निगोदमें जाता है. प्याज, लहसून अथवा काँच, पानीमें काँच होती है. एक कणमें असंख्य शरीर और एक शरीरमें अनंत जव हैं. आलाहा..! जैसे अनंत भव किये. उसमें वह उत्तरोत्तर दुर्बल है. आलाहा..!

‘जैसे सातिशय ज्ञानधारी गुरुदेव और उनकी पुरुषार्थप्रेरक वाणीके श्रवणका योग अनंत कालमें महापुण्योदसे प्राप्त होता है.’ सत्य श्रवण और सत्य धर्मका योग. आलाहा..! महा ‘पुरुषार्थप्रेरक वाणीके श्रवणका योग अनंत कालमें महापुण्योदसे प्राप्त होता है.’ आलाहा..! सत्य वाणी सुनने मिलनी... जवन जैसे ही यवा जाय. आलाहा..! हमारे संप्रदायके गुरु थे-हिराज महाराज, वे बेचारे किया करे, तत्त्वदृष्टिकी कुछ भी समझ नहीं थी. दूसरेका कर सकता है या नहीं, वह भी मावूम नहीं. दूसरेकी दया पालनी वह धर्म. आला..! बहुत जिये थे. स्थानकवासीमें ‘हिरा अटवा हिर बाकी सुतरना झणका’. उतनी उनकी नर्मी. क्रियाकांडमें भी बहुत (युस्त थे). लेकिन वह तत्त्वकी बात सुनी नहीं थी. आत्मा रागसे भिन्न है, शुभराग धर्म नहीं है, वह शब्द सुनने नहीं मिला था. आलाहा..! २१ वर्ष उसमें रहे थे न. गुरुकी हयाती चार साल रही. (संवत्) १९७०में दीक्षा ली थी, तो १९७४ तक. आला..! वह शब्द भी सुनने नहीं मिले थे. क्योंकि वह बात ही नहीं है. बात तो दया करो, यह करो, वह करो जैसी प्रज्ञापणा. सुननेवाले सुनकर कुछ करे, सामायिक, पौषध और प्रतिक्रमण (करे).

यहां कहते हैं, ‘महापुण्योदयसे प्राप्त होता है. इसलिये प्रमाद छोडकर...’ आलाहा..! अवसर आया है, प्रभु! अब समझ ले. जैसा अवसर मिलना मुखिल है. जैसी सत्य वाणी सुनने मिलनी... आलाहा..! है कठिन, है अपूर्व, अपूर्व नाम पूर्वमें कभी नहीं की जैसी. आलाहा..! जैसी वाणी भी महापुण्योदयसे प्राप्त होती है. ‘इसलिये प्रमाद छोडकर पुरुषार्थ करो.’ आलाहा..! प्रमाद छोडकर अंतर चैतन्यमूर्ति भगवान ध्रुव नित्यानंद प्रभु, उसकी पहिचना करो. उसके बिना जन्म-मरणका अंत नहीं आयेगा, प्रभु! आलाहा..! बाकी जाओं, कोडोंका दान करे, कोडों इपयेका मंदिर बनाये, धर्म नहीं है. वह धर्म नहीं है, शुभभाव है.

अभी आडिका गये थे. उन लोगोंने साठ लाख ईकट्ठे किये. पंद्रह लाख तो पहले किये थे. पंद्रह लाखका मंदिर बनानेके लिये. मेरे जानेके बाद पैतालीस लाख ईकट्ठे किये. साठ लाख. पचीस लाखका मंदिर बनायेंगे. नाईरोबी. कोडोपति बहुत

हैं. कला, बापु! यह करो, लेकिन वह भाव धर्म नहीं है. अशुभसे बचनेके लिये थोडा शुभ आये. तुम कोडो रूपये भर्ष करो और पचीस लाखका मंदिर बनाओ. इसलिये धर्म हो जाय और भव कम हो, वह बात नहीं है, बापु! वहाँके लोग नर्म हैं. बडी सभा एकट्ठी होती थी. शांतिसे सुनते थे. आलाला..!

एक ईन्द्र हुआ, ईन्द्र. साढे तीन लाख रूपयेमें. और भगवानकी जो मुख्य प्रतिमा विराजमान की, उसे विराजमान करनेवाले साढे पांच लाख रूपये (दिये). लक्ष्मीयंदलाई. साढे पांच लाख रूपया. भगवानको विराजमान करनेकी प्रतिमा अभी बनेगी, पधरामणी हो गयी हो, मैं था तब. लेकिन अभी मंदिर क्य्या है, नया है. अभी बारह महिने लगेंगे. बडा करेंगे. कला, इन सबमें क्रिया तो परकी होती है. उसमें करनेवालेका भाव कदाचित् शुभ हो, परंतु उससे धर्म हो, ऐसा नहीं है. यहां तो स्पष्ट बात है. आङ्किका हो या काठियावाड हो. आलाला..! वहां जैसेवाले बहुत हैं. ४५० तो एक गांवमें कोडपति हैं. ४५०. और १५ तो अरबपति हैं. वह अरबपति हमारे पास आया था. अमुक बात करता था, श्वेतांबर था. अपने द्विगंबर मुमुक्षु वहां मंदिर नहीं जाते थे. इसलिये वह बात करता था, आपके द्विगंबर मंडलके लोग वहां नहीं आते हैं. हम वहां परदेसमें गये, उसमें क्या कहना? उसे कला, बापु! तत्त्वज्ञान समझमें आनेके बाद व्यवहार कैसा हो, वह समझमें आयेगा. उतनी बात कही. तत्त्वज्ञान आत्मज्ञान है, वह समझनेके बाद व्यवहार कैसा हो, वह बादमें समझमें आयेगा. पहले कुछ भी व्यवहार माने, वह व्यवहार समझमें नहीं आयेगा. वह बेचारा आया था. बादमें मुंबई भी आया था. अरबपति. जैसे १५ अरबपति वहां है. आलाला..! उसमें धूलमें क्या है? बापु! ऐसा बडा राज अनंत बार हुआ. आलाला..! और मकरक नर्कमें गया. आलाला..! यह बात दुर्लभ मिली है.

‘इसलिये प्रमाद छोडकर पुरुषार्थ करो. सब सुयोग प्राप्त हो गया है,...’ आलाला..! सब सुयोग अर्थात् जितनी बाह्य सामग्री चाहिये, देव-गुरु-शास्त्र, वाणी मिले हैं, ‘उसका लाभ ले लो.’ उसमें यह लाभ ले-आत्माका ज्ञान कर ले और उसे समझ ले. आलाला..! बाकी तो सब व्यर्थ है. दुनिया तो प्रशंसा करेगी. पांच लाख दे तो मानो.. ओहोहो..! अभी पांच लाख दिये न. लाई! गंगवाल ना? मिसरीवाल. मिसरीवाल गंगवाल. २५ कोड है. उसके पास है. वहां गये थे. प्रवचनमें तो सब आते हैं न. उसने अभी पांच लाख दिये. पांच लाख क्या पांच कोड दे तो कुछ धर्म हो जाय, ऐसा थोडा भी नहीं है. उसमें शुभभाव हो तो पुण्य

हो और उसमें भी धर्म माने तो मिथ्यात्व हो. अरे..! ऐसी बातें हैं. सुने, सुनते थे. आहा..! पांच-पांच लाभ रुपया निकाले. एक भगवानकी प्रतिमा विराजमान की. लक्ष्मीचंद्रभाई थे, साढे पांच लाभ देकर विराजमान की. अभी हम गये थे. हम थे तब प्रतिष्ठा हो गयी. काम अभी बहुत बाकी है. सैंकड़ों पेटियां संगमरमरकी आयी हैं. करेंगे. आहा..! बापु! वह शुभभाव है. वह शुभभाव कभी अधिक हो जाय,.. आहाहा..! और वह धर्मका रूप धारण करे, ऐसा नहीं है.

यहां कहते हैं कि, लाभ ले, बापु! सावधान होकर. आहाहा..! अपना स्वभाव ज्ञानस्वभाव, आनंदस्वभाव, शुद्ध पवित्र दर्शनस्वभाव ऐसी अनंत-अनंत शक्तिका सागर प्रभु है. आत्मा अनंत-अनंत शक्ति कल, गुण कल, स्वभाव कल, उसका सागर आत्मा है. उसे 'सावधान होकर शुद्धात्माको पहचानकर...' आहाहा..! यह करना है. 'शुद्धात्माको पहचानकर भवभ्रमणका अंत लाओ.' तो भवभ्रमणका अंत आयेगा. नहीं तो यौरासीकि अवतार कर-करके हैरान हो गया है. कभी विचार भी नहीं किया कि मैंने अनंत भव कहां किये? किस जगह किये? किस क्षेत्रमें, किस कालमें, किस स्थितिमें (किये)? आहाहा..!

नर्कमें अनंत बार गया. पहली नर्कमें दस हजार वर्षकी स्थिति, यहां अनंत बार गया. दस हजार और एक समयकी स्थितिमें भी अनंत बार गया, फिर दो समयकी स्थितिमें अनंत बार गया. जैसे सब सिद्धांतमें लेख हैं. जैसे एक सागरकी स्थिति तक. समय-समयकी अधिकतामें अनंत बार उत्पन्न हुआ. आहाहा..! अरे..! उसके दुःखकी बातें क्या करनी? आहाहा..! उसकी उषण वेदनाका एक कण यहां लाये तो आसपासके दस योजनके लोग मर जाय. उतनी अग्नि. उसमें प्रभु! तूने लाखों वर्ष, अरबों वर्ष निकाले. अरे..! सागरोपम! सागरोपम निकाले. ठसलिये अब सब सामग्री प्राप्त हो गयी है. मनुष्यपना आदि. सत्य श्रवण भी मिल गया है. आहाहा..!

'सावधान होकर शुद्धात्माको पहचानकर...' किसकी पहचान? पुण्य और पापके विकल्पसे-भावसे रहित. शरीरसे तो रहित है. यह तो मिट्टी-धूल है. परंतु अंदरमें दया, दानका भाव.. दया, दान, भक्ति, पूजाका भाव हो, वह भी राग है, मैव है. उससे भी भिन्न आत्मा है. उसको पहचानकर.. आहाहा..! 'भवभ्रमणका अंत लाओ.' आहाहा..! उदट पूरा हुआ.

चैतन्यतत्त्वको पुद्गलात्मक शरीर नहीं है, नहीं है. चैतन्यतत्त्वको भवका परिचय नहीं है, नहीं है. चैतन्यतत्त्वको शुभाशुभ परिणति नहीं है, नहीं है. उसमें शरीरका, भवका, शुभाशुभ भावका सन्यास है.

जुपने अनंत भावोंमें परिभ्रमण किया, गुण हीनरूप या विपरीतरूप परिणमित हुआ, तथापि मूल तत्त्व ज्योंका त्यों ही है, गुण ज्योंके त्यों ही हैं. ज्ञानगुण हीनरूप परिणमित हुआ उससे कहीं उसके सामर्थ्यमें न्यानता नहीं आयी है. आनंदका अनुभव नहीं है इसलिये आनंदगुण कहीं यत्ना नहीं गया है, नष्ट नहीं हो गया है, घिस नहीं गया है. शक्तिरूपसे सब ज्योंका त्यों रहा है. अनादि कालसे जुप बाहर भटकता है, अति अल्प ज्ञानता है, आकुलतामें रूक गया है, तथापि चैतन्यद्रव्य और उसके ज्ञान-आनंदादि गुण ज्योंके त्यों स्वयमेव सुरक्षित हैं, उनकी सुरक्षा नहीं करनी पडती.

- जैसे परमार्थस्वरूपकी सम्यग्दृष्टि जुपको अनुभवयुक्त प्रतीति होती है. ३५८.

३६८. किसीने विभा है, यह पढना. किसीने विभा है. 'चैतन्यतत्त्वको पुद्गलात्मक शरीर नहीं है,...' क्या कहते हैं? भगवान जो अंदर चैतन्य वस्तु अरुपी अनंत गुणका पिंड है, उसको यह पुद्गलस्वरूप शरीर नहीं है. चैतन्यको शरीर नहीं है. शरीर जड है, उससे चैतन्यप्रभु भिन्न है. आलाला..! चैतन्य ज्ञानप्रकाशमूर्ति-ज्ञानकी प्रकाशमूर्ति, ज्ञानका पूर उसका नूर, ज्ञानके तेजका पूर, ऐसा जो यह भगवान आत्मा.. आलाला..! वह चैतन्य है. और यह शरीर जड पुद्गल है. दोनों चीज सर्वथा भिन्न है.

आत्मा शरीरका कुछ नहीं कर सकता. हाथ हिले आदि सब जडकी किया, जडसे (होती है), आत्मासे नहीं. अरे..! कैसे बैठे? पूरा दिन काम ले और कहे कि उससे होता नहीं. प्रभु तो ना कहते हैं. अनंत तीर्थंकरोंकी पुकार है कि अक तत्त्वका दूसरे तत्त्वके साथ कोई भेद नहीं है. याहे तो जड हो, याहे तो चैतन्य हो. अक तत्त्व दूसरे तत्त्वको... आलाला..! छूता नहीं. अक तत्त्व दूसरे तत्त्वको छूता नहीं, स्पर्शता नहीं. ऐसा पाठ है, समयसारकी तीसरी गाथा. आलाला..! शरीरको आत्मा छूता नहीं. जड (है). आत्मा चैतन्य. ज्ञान ही पूरी अवग है. अरे..!

'चैतन्यतत्त्वको पुद्गलात्मक शरीर नहीं है, नहीं है.' नहीं है, दो बार डावा है. भगवान आत्मा चैतन्यस्वरूप, उसको यह पुद्गल शरीर नहीं है. उसका नहीं है. नहीं है, नहीं है. आलाला..! इत्यादि-इत्यादि कहेंगे...

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)